३. हड़प्पा संस्कृति

३.१ हड़प्पा संस्कृति
३.२ मकान और नगरीय संरचना
३.३ मुद्राएँ–बरतन
३.४ महास्नानागार
३.५ जनजीवन
३.६ व्यापार
३.७ ह्रास के कारण

करके देखो ।

भारत के मानचित्र प्रारूप में हड़प्पा संस्कृति के स्थानों के नाम लिखो ।

३.१ हड़प्पा संस्कृति

१९२१ ई.स. में पंजाब में रावी नदी के किनारे हड़प्पा नामक स्थान पर सबसे पहले उत्खनन प्रारंभ हुआ । अत: इस संस्कृति को 'हड़प्पा संस्कृति' नाम प्राप्त हुआ । इस संस्कृति को 'सिंधु संस्कृति' के नाम से भी जाना जाता है ।

हड़प्पा की दक्षिण दिशा में लगभग ६५० कि. मी. की दूरी पर सिंधु नदी की घाटी में मोहनजोदड़ो नामक स्थान पर उत्खनन हुआ । हड़प्पा और मोहन जोदड़ो स्थानों पर हुए उत्खनन में जिन वस्तुओं और वास्तुओं के अवशेष प्राप्त हुए; उनमें अद्‌भुत साम्य था ।

धौलावीरा, लोथल, कालीबंगा, दायमाबाद आदि

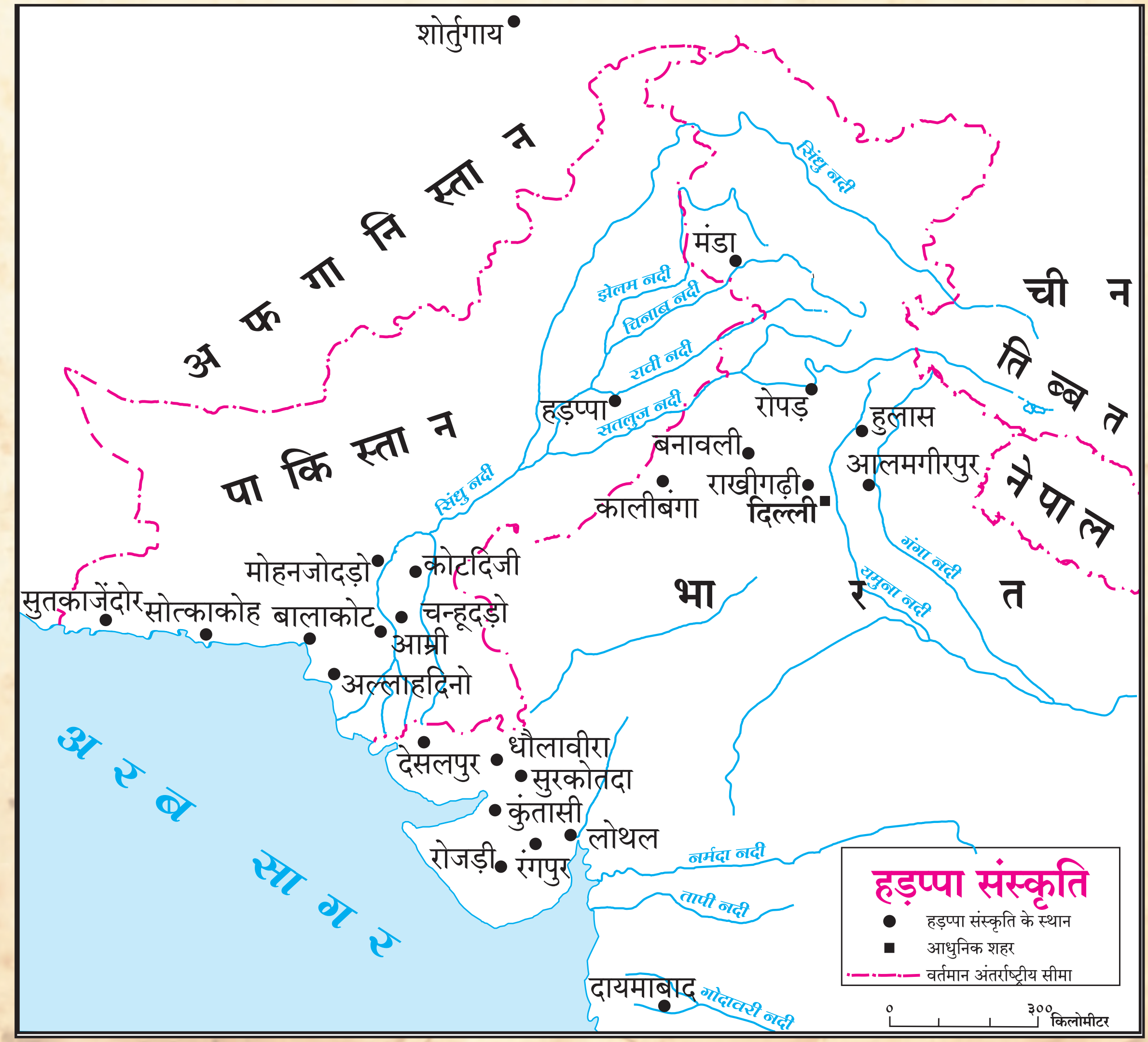

स्थानों पर भी हुए उत्खनन में ऐसे ही अवशेष पाए गए हैं ।

हड़प्पा संस्कृति की विशेषताएँ सामान्यत: सर्वत्र एक समान पाई जाती हैं । इनमें नगरीय संरचना, सड़कें, भवन निर्माण, जल निस्सारण अथवा गंदे जल का निपटारा, मुद्राएँ, बरतन, खिलौने, मृतशरीर को दफनाने की पद्धति आदि का मुख्य रूप से समावेश होता है ।

बताओ तो !

- अपने परिसर/गाँव के मकानों की संरचना कैसी है ?
- क्या वे मकान खपरैल, सपाट छतवाले अथवा ढालू छतवाले हैं ?

३.२ मकान और नगरीय संरचना :

हड़प्पा संस्कृति के लोगों के मकान और अन्य निर्माण कार्य मुख्य रूप से पक्की ईंटों से बने हुए थे । कुछ स्थानों पर निर्माण कार्य के लिए कच्ची ईंटों और पत्थरों का भी उपयोग किया जाता था । मकान के बीचोंबीच चौक और उसके चारों ओर कमरे बनाए जाते थे । इस प्रकार की संरचना मकानों की होती थी । मकानों के अहाते में कुएँ, स्नानगृह, शौचालय होते थे । गंदे जल का निपटारा कराने के लिए समुचित प्रबंधन किया जाता था । इसके लिए मिट्टी के पक्के परनारों का उपयोग किया जाता था । सड़कों की नालियाँ ईंटों से बनाई जाती थीं । ये नालियाँ ढँकी होती थीं । इससे यह स्पष्ट होता है कि हड़प्पाकालीन लोग स्वास्थ्य के प्रति कितने अधिक जागरूक थे ।

हड़प्पा संस्कृति का कुआँ

बताओ तो !

- गंदा जल बहा ले जाने वाली नालियाँ यदि ढँकी न हों तो स्वास्थ्य से संबंधित कौन-कौन-सी समस्याएँ निर्माण होती हैं ।

सड़कें चौड़ी और वे एक-दूसरे को समकोण में काटेंगी; इस प्रकार बनाई गई थी । परिणामस्वरूप चौकोन और रिक्त स्थान रह जाता था । इन रिक्त स्थानों में मकान बनाए जाते थे । नगरों के दो अथवा अधिक विभाग बनाए जाते थे तथा प्रत्येक विभाग स्वतंत्र परकोटे से संरक्षित रहता था ।

करके देखो ।

एक आलू लो । उसे बीच में से काटो । कटे हुए हिस्से पर कील की सहायता से कुछ अक्षर, आकृतियाँ उकेरो । अब इन अक्षरों और आकृतियों के उकेरे हुए हिस्सों को स्याही अथवा रंग में डुबोओ । उन रंगीन हिस्सों की कोरे कागज पर छाप लो । क्या होता है; इसका निरीक्षण करो ।

३.३ मुद्राएँ–बरतन

हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ मुख्य रूप से चौकोर और स्टिएटाइट नामक पत्थर से बनाई जाती थीं । मुद्राओं पर विभिन्न प्राणियों की आकृतियाँ पाई जाती हैं । उनमें बैल, भैंस, हाथी, गैंडा, बाघ जैसे सचमुच के प्राणी तथा एक सींगवाले काल्पनिक प्राणी देखने को मिलते हैं । अन्य प्राणियों की आकृतियों की भाँति ही मनुष्य की आकृतियाँ भी पाई जाती हैं । इन मुद्राओं का उपयोग छाप लेने के लिए किया जाता था ।

मुद्राएँ

करके देखो ।

मिट्टी के बरतन कैसे बनाए जाते हैं ; इसे समझने के लिए मिट्टी के बरतन बनानेवाले कारीगर से बातचीत करो ।

- किस मिट्टी का उपयोग करते हैं ?
- मिट्टी कहाँ से लाते हैं ?
- एक बरतन बनने में कितना समय लगता है ?

हड़प्पा संस्कृति के स्थानों पर हुए उत्खनन द्‌वारा विभिन्न प्रकारों और आकारों के बरतन पाए गए हैं । उनमें लाल रंग के पृष्ठभाग पर काले रंग से बनाए गए नक्काशीवाले बरतन हैं । नक्काशी के नमूनों के रूप में मछली की चोइयाँ, एक-दूसरे में पिरोए हुए वलय, पीपल के पत्ते जैसे प्रतीकों का समावेश है । हड़प्पा संस्कृति के लोग मृत व्यक्ति को दफनाते समय उस व्यक्ति के शव के साथ मिट्टी के बरतन दफना देते थे ।

बरतन

निरीक्षण करो ।

अपने परिसर के तैराकी तालाब पर जाओ। तालाब का पानी बदलने और तालाब में नए-से पानी भरने की प्रणाली का निरीक्षण करो ।

वर्तमान तैराकी तालाब और हड़प्पाकालीन स्नानगृह की तुलना करो ।

३.४ महास्नानागार

मोहनजोदड़ो में एक विशाल स्नानगृह पाया गया है। महास्नानागार का स्नानकुंड लगभग २.५ मीटर गहरा था । उसकी लंबाई लगभग १२ मीटर और चौड़ाई लगभग ७ मीटर थी । कुंड का पानी रिस न जाए; इसके लिए उसे भीतर से पक्की ईंटों से बाँधा गया था । उसमें उतरने की व्यवस्था थी तथा समय-समय पर कुंड का पानी बदलने की सुविधा भी थी ।

मोहनजोदड़ो का महास्नानागार

बताओ तो !

- अपने परिसर/गाँव में उगनेवाले फलों/फसलों के नाम लिखो ।
- अपने परिसर/गाँव के लोग कौन-कौन-से वस्त्रों का उपयोग करते हैं ?
- उन गहनों/आभूषणों के नाम लिखो; जो तुम्हें मालूम हैं ।

३.५ जनजीवन

हड़प्पा संस्कृति के लोग खेती करते थे । कालीबंगा में जोते हुए खेत का प्रमाण मिला है । कालीबंगा के लोग विभिन्न फसलें उपजाते थे । उनमें गेहूँ, जौ(बार्ली) प्रमुख फसलें थीं । राजस्थान में जौ की और गुजरात में मडुआ की फसल बड़ी मात्रा में उगाई जाती थी । इसके अतिरिक्त मटर, तिल, मसूर आदि फसलें उगाई जाती थीं । हड़प्पा संस्कृति के लोग कपास से अवगत थे ।

उत्खनन में पाई गईं मूर्तियों (पुतले), मुद्राओं पर अंकित चित्रों और कपड़े के अवशेष आदि के प्रमाणों के आधार पर मालूम होता है कि वे लोग वस्त्र बुनते थे । स्त्री-पुरुषों की वेशभूषा में घुटने तक का वस्त्र एवं ऊपरी दोपट वस्त्र का समावेश था ।

उत्खनन में विभिन्न प्रकार के गहने/आभूषण पाए गए हैं । वे गहने/आभूषण स्वर्ण, तांबा, रत्न तथा सीपियाँ, कौड़ियाँ, बीज आदि से बने हुए थे । बहुपरतोंवाली मालाएँ, अँगूठियाँ, बाजूबंद, और कमरबंद (करधनी) जैसे आभूषणों का स्त्री-पुरुष उपयोग करते थे । स्त्रियाँ भुजा तक चूड़ियाँ पहनती थीं ।

हड़प्पा संस्कृति के आभूषण

यहाँ पाया गया वैशिष्ट्यपूर्ण एक पुतला हड़प्पाकालीन कला का उत्कृष्ट नमूना है । उसके चेहरे का प्रत्येक भाव बहुत स्पष्ट है । यही नहीं बल्कि उसके द्वारा कंधे पर ओढ़ी हुई शाल तथा उस शाल पर अंकित त्रिदल की नक्काशी बहुत ही कलात्मक ढंग से दर्शाई गई है ।

हड़प्पाकालीन कला का नमूना

करके देखो ।

अपने समीप की पंसारी की दुकान पर जाओ । दुकानदार अपनी दुकान के लिए आवश्यक माल/सामान कहाँ से लाता है; इसकी जानकारी प्राप्त करो । उन वस्तुओं की सूची बनाओ ।

३.६ व्यापार

हड़प्पा संस्कृति के लोग भारत में तथा भारत के बाहरी देशों के साथ व्यापार करते थे । सिंधु नदी की घाटी में उत्तम श्रेणी की कपास होती थी । इस कपास का पश्चिम एशिया, दक्षिण यूरोप और इजिप्त देशों में निर्यात होता था । सूती वस्त्र का भी निर्यात होता था । इजिप्त को मलमल वस्त्र की आपूर्ति हड़प्पा संस्कृति के व्यापारियों द्वारा होती थी । कश्मीर, दक्षिण भारत, ईरान, अफगानिस्तान, बलुचिस्तान देशों से चांदी, जस्ता, बहुमूल्य नगीने, माणिक, देवदार की लकड़ी आदि वस्तुएँ लाई जाती थीं । विदेशों के साथ चलने वाला यह व्यापार सड़क और समुद्री मार्ग से चलता था । उत्खनन में पाई गईं कुछ मुद्राओं पर जहाजों के चित्र उकेरे गए हैं । लोथल नामक स्थान पर विशाल बंदरगाह पाया गया है । हड़प्पा संस्कृति का व्यापार अरब सागर के तट से चलता था ।

लोथल का बंदरगाह (अवशेषों के आधार पर पुनर्रचना)

३.७ ह्रास के कारण

निरंतर आनेवाली बाढ़, बाहरी समूहों के हमले, व्यापार में होनेवाला घाटा जैसी बातें हड़प्पा संस्कृति के ह्रास का कारण बनीं । इसी भाँति वर्षा की मात्रा कम हो जाना, नदियों के पाट सूख जाना, भूकंप, समुद्रीतल में होनेवाले परिवर्तन जैसे कारणों से भी कुछ स्थान उजड़ गए । इन कारणों से बड़ी मात्रा में लोग स्थलांतर कर गए और हड़प्पा संस्कृति के नगरों का ह्रास हुआ ।

हड़प्पा संस्कृति समृद्ध एवं संपन्न नगरीय संस्कृति थी । इस संस्कृति ने भारतीय संस्कृति की नींव रखी ।

स्वाध्याय

१. एक वाक्य में उत्तर लिखो :

(१) इस संस्कृति को हड़प्पा नाम क्यों प्राप्त हुआ होगा ?

(२) हड़प्पा संस्कृति के बरतनों पर अंकित नक्काशी के नमूनों में किन प्रतीकों का समावेश है ?

(३) हड़प्पा संस्कृति के व्यापारी इजिप्त को किस वस्त्र की आपूर्ति करते थे ?

२. प्राचीन स्थानों की सैर पर जाते समय क्या करोगे ?

जैसे–स्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करना, प्रदूषण की रोक–थाम करना, ऐतिहासिक साधनों का संरक्षण करना आदि ।

३. मोहनजोदड़ो के महास्नानागार का चित्र बनाओ ।

४. निम्न तालिका में हड़प्पाकालीन जनजीवन की जानकारी लिखो ।

प्रमुख फसलें	वेशभूषा	गहने/आभूषण
(१) ----	----	----
(२) ----	----	----
(३) ----	----	----
(४) ----	----	----

५. एक शब्द में उत्तर दो । ऐसे प्रश्न तुम स्वयं तैयार करो और उनके उत्तर लिखो :

जैसे– हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएँ बनाने के लिए उपयोग में लाया गया पत्थर ।

६. हड़प्पा संस्कृति की समकालीन अन्य वैश्विक संस्कृतियों को संसार के मानचित्र प्रारूप में दर्शाओ ।

उपक्रम :

(१) तुम अपने विद्यालय का प्रारूप बनाओ और उसमें विद्यालय के विभिन्न स्थानों को दर्शाओ ।

जैसे– ग्रंथालय, मैदान, संगणक कक्ष आदि ।

(२) अपने गाँव और घर की अनाज भंडारण पद्धति पर विस्तार में एक टिप्पणी लिखो ।

हड़प्पाकालीन खिलौने

* * *